DR ANWAR ALAM 9.5.2020

Communist Revolution And Role of Maotse Tung

साम्यवादी क्रान्ति और माओत्से तुंग की भूमिका

माओत्से तुंग जिसने अपनी नयी सोंच के माध्यम से चीन में प्राचीन रुढ़िवाद का अन्त किया और मार्क्सवादी विचारधारा को चीनी परिस्थितियों के अनुसार नये रुप में प्रस्तुत किया। चीन मे गृह युद्ध और विदेशी आक्रमण से झुझते हुये चीन को अन्तत: एक प्रगतिशील देश बनाने मे पुरा-पुरा सहयोग दिया। यही कारण था कि चीनी जनता माओत्से तुंग को एक मुक्तिदाता के रुप मे देखने लगी।

माओत्से तुंग का जन्म 1893ई० में हुनान के एक साधारण परिवार में हुआ था। वह बचपन से ही क्रान्तिकारी प्रवृति का था। उसके पिता उसे शिक्षा देने के स्थान पर एक किसान बनाना चाहते थे। मगर अपने पिता की बात न मानते हुए उसने शिक्षा प्राप्ति में रुची ली और अपनी शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय जाना आरम्भ किया। महान पुरुषों की जीवनी उसे बहुत प्रभावित करती थी और एक क्रान्ति उसके अन्दर बलवती होती जा रही थी। जब वह 18 वर्ष का था उसी समय 1911 की चीनी क्रान्ति हुई। माओत्से तुंग डा० सनयातसेन के विचारों से बड़ा प्रभावित था। यही कारण था कि 1911 ई० की चीनी क्रान्ति में वह इस आन्दोलन में शामिल हो गया। युआन शिकाई के शासन मे वह एक सैनिक के रुप में अपना जीवन व्यतित करने लगा। लेकिन उसकी मंजिल तो कहीं और थी। अध्ययन के प्रति रुचि होने के कारण वह निरन्तर भिन्न-भिन्न विद्वानो के ग्रन्थों का अध्ययन करता रहा। च्यांगकान फू तथा मार्क्स द्वारा लिखित समाजवादी पुस्तक उसे बेहद प्रभावित करती थीं। फिर वह प्रोफेसर चेन के प्रभाव में आया जिससे उसकी रुची साम्यवाद में बढ़ने लगी और उसने सन् 1921 ई० में मार्क्सवादियों के शंघाई सम्मेलन में भी भाग लिया। 1928 ई० तक माओत्से तुंग चीन के साम्यवादी दल का प्रमुख नेता बन चुका था। उसने चीन में साम्यवाद को नयी ऊंचाईयों तक पंहुचाने में बड़ी भूमिका निभाई। 1949ई० तक चीन की बागडोर पुरी तरह उसके हाथ में आ चुकी थी।

माओत्से तुंग चीन को समानवाद और लोकतंत्र पर आधारित एक देश के रुप में देखना चाहता था। यही कारण था कि उसने 1949ई० में जन राजनीतिक सलाहकार सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें 13 राजनीतिक दलों के 662 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में समाजवाद के

सिद्धान्तों को स्वीकार करके नवीन संविधान बनाने का निर्णय लिया गया और माओ त्से तुंग को शासन के प्रमुख के रूप में स्वीकार किया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि जैसे जैसे प्रान्तों में शान्ति व्यवस्था स्थापित होती जायेगी वैसे-वैसे वहाँ स्थानीय और प्रान्तीय सरकारों का गठन किया जायेगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि समाजवाद के सिद्धान्त के आधार पर अब चीन में एक नये संविधान का निर्माण किया गया और केन्द्रीय शासन की प्रधानता का दायित्व माओ त्से तुंग को सौंपा गया।

सामाजिक एवं धार्मिक सुधार:- अब साम्यवादी सरकार ने सामाजिक जीवन की सभी गतिविधियों को सरकारी नियन्त्रण में लाने का प्रयास किया। महिलाओं को विवाह सम्पत्ति व तलाक के सम्बन्ध में पुरुषों के समान अधिकार प्रदान किए गए। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से उन्हें काम करने की आजादी दी गयी साथ ही अब उन पर भी उनका अधिकार स्वीकार किया गया। सन्तान की देखभाल का दायित्व माता-पिता दोनों के ऊपर डाला गया। अब सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर महिलाओं की नियुक्ति होने लगी। वेश्यावृत्ति का खात्मा कर उन्हें दूसरे सम्मानजनक कार्य से जोड़ा गया। इस प्रकार हम पाते हैं कि 1950 ई० के विधान के अनुसार अब महिलाओं को समानता का अधिकार दिया गया। अब महिलाएं सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर बहाल होने लगी।

चीनी साम्यवादी सरकार ने मार्क्स के ही समान धर्म को अफीम से संज्ञा दी जो मनुष्य की चेतना में बड़ा बाधक बन जाता है और इनसे इनकी प्रगति छीन लेता है। इसलिए अब साम्यवादी सरकार ने तमाम धर्मस्थलों के स्थान पर विद्यालय, पुस्तकालय और सार्वजनिक मनोरंजन केन्द्र आदि की स्थापना का अभियान चलाया। इस प्रकार माओ त्से तुंग द्वारा धर्म के अस्तित्व को समाप्त करने का सफल प्रयास किया गया। माओ त्से तुंग ने अपने उन साम्यवादियों की भावना का भी इसके द्वारा ख्याल रखा जो धर्म के ऐसे स्वरूप को स्वीकार करते थे जिसमें समाज सेवा का भाव है।

राजनीतिक एकता का आरम्भ :- माओ त्से तुंग एक सुदृढ़ सरकार के गठन के लिए राजनीतिक एकता को बहुत महत्वपूर्ण मानता था। हालांकि क्षेत्रफल और जनसंख्या की दृष्टि से चीन जैसे विशालतम देश को एकता के सूत्र में बांधना कोई साधारण बात नहीं थी क्योंकि मंचू शासन काल में भी कई प्रान्त सरकार के नियन्त्रण से मुक्त थे हालांकि मंचू शासन की सर्वोच्चता को स्वीकार करते थे किन्तु उन पर मंचू शासकों का प्रभुत्व नाम मात्र का था। 1911 ई० की क्रान्ति के बाद भी यही स्थिति बनी रही किन्तु साम्यवादी सरकार की स्थापना के बाद राजनीतिक एकता का सूत्रपात हुआ और कुछ प्रान्तों को बलपूर्वक एकता के सूत्र में बाँध दिया गया।

नवीन संविधान का निर्माण :- 1953 ई० में माओ त्से तुंग की अध्यक्षता में नये संविधान के निर्माण के लिए एक समिति बनाकर नये संविधान का प्रारूप तैयार किया गया और जिसे 20 सितम्बर 1954 ई० को स्वीकार कर लिया गया। इस नये संविधान द्वारा साम्यवादी दल को देश के सर्वोच्च राजनीतिक दल के रूप में मान्यता प्रदान की गयी और राष्ट्रीय विधान सभा को शासन की तमाम शक्तियाँ सौंप दी गयी जिसका अधिवेशन प्रतिवर्ष होना था। नये संविधान के द्वारा सभी दलों को मान्यता दी गयी थी किन्तु राज्य की शक्ति साम्यवादी दल द्वारा नियन्त्रण होती थी।

आर्थिक सुधार :- चीन साम्यवादी सरकार ने विदेशी पूंजी को जब्त करके कारखानों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। जापान की सरकार के जो कारखाने चीन में थे उनको भी सरकार ने अपने नियन्त्रण में ले लिया। सरकार ने छोटे उद्योगपतियों को संरक्षण प्रदान करके उन्हें उद्योग धन्धो के विकास के लिए प्रोत्साहित किया। साथ ही साथ श्रमिकों

की मजदूरी भी निश्चित कर दी गयी जिससे उन्हें अधिक मजदूरी मिल सके। मुद्रा एंव बैंकिंग की समस्याओं को हल करने के लिये पीपुल्स बैंक आफ चायना की स्थापना की गयी तीन विरोधी आन्दोलन के द्वारा भ्रष्टाचार बर्बादी और नौकरशाही पर अंकुश लगाया गया तथा पाँच विरोधी आन्दोलन के द्वारा घूसखोरी कर चोरी और नौकरशाही पर अंकुश लगाया गया। इस प्रकार इन प्रयासों से 1952 ई० तक चीन की आर्थिक व्यवस्था में विकास की लहर दौड़ गयी।

<u>औद्योगिक विकास</u> :— माओत्से तुंग की साम्यवादी सरकार ने चीन के औद्योगिक विकास की ओर विशेष ध्यान दिया तथा 1953 ई० में प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत चीन में विशाल उद्योग स्थापित किये गये। इस कार्य में चीन की सहायता रुस के द्वारा होती रही। अब चीन के उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि होने लगी और पूर्वी एशिया उसका नया बाजार बनने लगा। अब चीन में समृद्धि आने लगी। 1957 ई० के बाद चीन के उद्योग धन्धों में और भी प्रगति हुई जो समय बीतने के साथ लगातार आगे बढ़ती रही।

<u>कृषि के क्षेत्र में सुधार</u> :— माओ त्से तुंग जिसने आरम्भ से ही किसानों के उत्थान की बात की थी, कृषि के विकास की बात की थी इसलिये अब समय आने पर वह इन्हें कैसे नजर अन्दाज कर सकता था। इसलिये उसने इस ओर कदम बढ़ाते हुए इनकी दशा में आवश्यक सुधार लाया। सबसे पहले उसने बाढ़ की विभीषिका से निपटने के लिये नदियों पर बाँध और विद्युत परियोजनाएं स्थापित की। जिससे उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा नष्ट होने से बच गया और अब प्रचुर मात्रा में खेती होने लगी। उत्पादन के बढ़ने से लोगों के जीवन स्तर में सुधार आने लगा। अनाज का उत्पादन इतना होने लगा कि चीन अब बाहर के देशों को भी अनाज देने लगा।

Continue

नदियों पर बनाये गये विशाल बाँधों के चलते चीनी जनता को रोजगार का अवसर मिला जिससे इनकी आर्थिक स्थिति में एकाएक परिवर्तन आगया।

साथ ही साथ 1950 ई० में साम्यवादी सरकार ने भूमि सुधार कानून पारित करके किसानों की दशा को उन्नत बनाने का प्रयास किया। अब किसानों को भी यह विश्वास हो गया कि वे अपनी भूमि के स्वयं मालिक हैं इसलिए वे जितना अधिक खेत में उत्पादन करेंगे उतना ही अधिक लाभान्वित होंगे।

कम्यून का गठन :— माओ त्से तुंग की सरकार ने किसानों को कम्यून के रूप में संगठित किया। पाँच हजार किसान परिवारों को मिलाकर एक कम्यून का गठन किया जाता था और इस कम्यून के पास अपनी कृषि भूमि व कारखाने होते थे। जबकि सरकार इनके भोजन व स्वास्थ सुविधाओं का प्रबन्ध करती थी। नगरों में भी इसी प्रकार के कम्यून स्थापित किए गये और लम्बी छलांग के अन्तर्गत इन कम्यूनों को विशेष प्रोत्साहन दिया गया किन्तु शहरी कम्यून अपने उद्देश्यों में विफल रहे और 1958 ई० में लम्बी छलांग की नीति को त्याग दिया गया।

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक सुधार :— माओ त्से तुंग जो देश की उन्नति के लिए शिक्षा को एक अहम माध्यम मानता था और साम्यवादी विचारधारा को घर-घर पहुंचाने के लिए भी शिक्षा की अहम जरुरत महसूस करता था। उसने अब शिक्षा के विकास के लिए चीन में प्रारंभिक विद्यालयों, माध्यमिक स्कूलों और कॉलेजों का एक जाल सा बिछा दिया। देखते ही देखते अब विद्यार्थियों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई। शहरी क्षेत्रों में विचार गोष्ठियों की स्थापना के माध्यम से साम्यवादी सिद्धान्तों का प्रचार करने का एक कार्यक्रम चलाया गया।

माओ त्से तुंग का ऐसा मानना था कि सांस्कृतिक क्रान्ति के माध्यम से चीनी समाज के सभी अंगों में व्याप्त पूंजीवाद

को जड़ से खत्म किया जा सकता है। सांस्कृतिक क्रान्ति के द्वारा वह चीन में साम्यवाद को तमाम बुराईयों से पाक एक विचारधारा के रुप में स्थापित करना चाहता था। इसके लिए उसने स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पाश्चात्य शिक्षा का विरोध किया और माओत्सेतुंग की पुस्तकों के अध्ययन पर बल दिया। चर्चों व मूर्तियों को तोड़ दिया गया और जगह-जगह पर माओत्सेतुंग के चित्र लगाये गये।

वैज्ञानिक प्रगति :- माओत्सेतुंग ने सामाजिक व आर्थिक विकास को पटरी पर लाने के बाद वैज्ञानिक विकास की ओर ध्यान दिया। इसी उद्देश्य से चीन ने 1955 ई० में सोवियत संघ के साथ एक शान्तिपूर्ण परमाणु समझौता किया। किन्तु 1959 ई० के बाद चीन ने प्रक्षेपास्त्रों का विकास करके अपनी परमाणु क्षमता के सैन्य उपयोग का खुला संकेत देना शुरु कर दिया। 1964 ई० के बाद चीन ने परमाणु परीक्षण कर के स्वंय को एक परमाणु शक्ति के रुप में स्थापित कर दिया इसके साथ-साथ मध्यम दूरी तक मार करने वाली मिसाइलों को भी तैयार कर लिया। 1970 ई० में चीन ने अपना पहला उपग्रह अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित किया। वैज्ञानिक प्रगति के बल पर चीन ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अहम भूमिका निभानेवाली पाँच महाशक्तियों में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य का दर्जा हासिल कर लिया।

इन तमाम सफलताओं के बावजूद साम्यवादियों की सांस्कृतिक क्रान्ति ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र पर एक हलचल पैदा कर दी। माओत्सेतुंग की तानाशाही गतिविधियों का अब हर ओर विरोध होने लगा जिसका प्रभाव इसकी अर्थव्यवस्था पर नज़र आने लगा किन्तु इसके बावजूद चीन ने अपने विकास की रफ्तार को कम नहीं होने दिया। निसंदेह यह तमाम श्रेय माओत्सेतुंग को दिया जा सकता है।

—X—